# श्री कृष्ण चालीसा

Temples.bio

नीचे दिए गए यूआरएल श्री कृष्ण चालीसा का जाप करना और सुनना सीखें।

www.temples.bio/s-17

॥ दोहा ॥
बंशी शोभित कर मधुर।
नील जलद तनु श्यामल ॥
अरुण अधर जनु बिंब फल।
नयन कमल अभिराम ॥

पूर्णेन्दु अरविंद मुख।
पीताम्बर शुभ सजल ॥
जय मनमोहन मदन छवि।
कृष्णचन्द्र महाराज ॥

जय जय यदुनंदन जग वंदन।
जय वसुदेव देवकी नंदन ॥1॥
जय यशोदा सुत नंद दुलारे।
जय प्रभु भगतन के रखवारे ॥2॥

जय नटनागर नाग नथैया।
कृष्ण कन्हैया धेनुं चरैया ॥3॥
पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धरो।
आवो दीनन कष्ट निवारो ॥4॥

बंसी मधुर अधर धारी तेरी।
होवे पूरण मनोरथ मेरी ॥5॥
आवो हरि पुनि माखन चाखो।
आज लाज भगतन की राखो ॥6॥

गोल कपोल चिबुक अरुणारे।
मृदुल मुस्कान मोहिनी धारे ॥7॥

राजित राजीव नयन विशाला ।
मोर मुकुट वैजयंतीमाला ॥8॥
कुंडल श्रवण पीत पट आछे ।
कटि किंकिणि काचन काछे ॥9॥

नील जलज सुंदर तन सोहे ।
छवि लखि सुर नर मुनि मन मोहे ॥10॥
मस्तक तिलक अलक घुंघराले ।
आवो श्याम बंसुरी वाले ॥11॥

करि पी पान पूतनहि तार्यो ।
अक बक कागासुर मार्यो ॥12॥
मधुवन जलत अगिनि जब ज्वाला ।
भये शीतल लखताहि नंदलाला ॥13॥

सुरपति जब ब्रज चढ़्यो रिसाई ।
मूसर धार बारि बरसाई ॥14॥
लागत लागत ब्रिज चह बहायो ।
गोवर्धन नख धरि बचायो ॥15॥

लखि यशोदा मन भ्रम अधिकाई ।
मुख मोह चौद भुवन दिखाई ॥16॥
दुष्ट कंस अति उद्धम मचायो ।
कोटि कमल कहा फूल मंगायो ॥17॥

नाथि कैयहि तब तुम लीन्हे ।
चरण चिन्ह दे निर्भय कीन्हे ॥18॥

करि गोपिन संग रास बिलासा ।
सब की पूरण करी अभिलाषा ॥19॥
केतिक महा असुर संहार्यो ।
कंसहि केश पकड़ि दीई मार्यो ॥20॥

मातु पिता की बंदि छुड़ाई ।
उग्रसेन कहं राज दिलाई ॥21॥
महि से मृतक चाहो सुत लायो ।
मातु देवकी शोक मिटायो ॥22॥

भौमासुर मुर दैत्य सहारी ।
लाये षट्दश सहस कुमारी ॥23॥
दीई भीनहि त्रिण चिरि सहारा ।
जरासिंधु राक्षस कहं मारा ॥24॥

असुर वृकासुर आदिक मार्यो ।
निज भगतन के तब कष्ट निवार्यो ॥25॥
दीन सुदामा के दुःख तार्यो ।
तंडुल तिन मुठी मुख दार्यो ॥26॥

प्रेम के साग विदुर घर मांगे ।
दुर्योधन के मेवा त्यागे ॥27॥
लखि प्रेम की महिमा भारी ।
नौमी श्याम दीनन हितकारी ॥28॥

भारत में पार्थ रथ हांके ।
लिये चक्र कर नहीं बल थाके ॥29॥

निज गीता के ज्ञान सुनाई ।
भगतन हृदय सुधा बरसाई ॥30॥
मीरा थी ऐसी मतवाली ।
विष पी गई बजाकर ताली ॥31॥

राणा भेजा सांप पिटारी ।
शालिग्राम बने बनवारी ॥32॥
निज माया तुम विधिहीन दिखायो ।
उर ते संशय सकल मिटायो ॥33॥

तव शत निंदा करी तत्काला ।
जीवन मुक्त भयो शिशुपाला ॥34॥
जभी द्रौपदी टेर लगाई ।
दीननाथ लाज अब जाई ॥35॥

अस अनाथ के नाथ कन्हैया ।
डूबत भंवर बचावत नैया ॥36॥
सुंदरदास आस उर धारी ।
दया दृष्टि कीजे बनवारी ॥37॥

नाथ सकल मम कुमति निवारो ।
छमो वेग अपराध हमारो ॥38॥
खोलो पट अब दर्शन दीजे ।
बोलो कृष्ण कन्हैया की जय ॥39॥

॥ दोहा ॥

यह चालीसा कृष्ण का पाठ करे उर धारी ।
अष्ट सिद्धि नव निधि फल लहे पदार्थ चारी ॥40॥

Temples.bio

नीचे दिए गए यूआरएल श्री कृष्ण चालीसा का जाप करना और सुनना सीखें।
www.temples.bio/s-17